

रायपुर, मुंबई, भोपाल, मंडला, जबलपुर, कटनी, इंदौर, दिल्ली, नरसिंहपुर, सिवनी से एक साथ प्रकाशित

yashbharat.co.in

नये जमाने के साथ..

विनम्रता लोगों के दिल जीतती है। घमंड से दूरी बनती है।

● वर्ष- 01 अंक-74● रायपुर ●शुक्रवार, 25 सितम्बर , 2026 ● मूल्य- 4 रुपए ● पृष्ठ- 8 ●भाद्रपद , शुक्ल पक्ष13● विक्रम संवत् 2083

यमुना एक्सप्रेसवे पर चलती स्लीपर बस में भीषण आग, 9 यात्री जिंदा जले , कई झुलसे



ग्रेटर नोएडा, एजेंसी। यमुना एक्सप्रेसवे पर जेवर एयरपोर्ट के पास बुधवार देर रात एक चलती स्लीपर बस में भीषण आग लगने से दर्दनाक हदसा हो गया। हदसे में नौ यात्रियों की जलकर मौत हो गई, जबकि कई लोग घायल बताए जा रहे हैं। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक हदसा रात करीब 11:30 बजे, यमुना एक्सप्रेसवे के किलोमीटर 33 के पास हुआ। बस नोएडा से आगरा की ओर जा रही थी। यात्रियों के अनुसार, बस के केबिन से अचानक जलने की गंध आने

लगी। कुछ यात्रियों ने चालक और परिचालक को इसकी जानकारी भी दी, लेकिन आरोप है कि बस को तत्काल रोककर जांच नहीं की गई।

कुछ ही देर बाद चालक की सीट के पास से आग की तेज लपटें निकलने लगीं। देखते ही देखते आग ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया। आग लगने के बाद यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। कुछ यात्री किसी तरह बस से बाहर निकलकर अपनी जान बचाने में सफल रहे, जबकि कई यात्री अंदर ही फंस गए। हदसे में नौ यात्रियों की जिंदा जलने से मौत हो गई। बस को आग की लपटों में घिरा देखकर एक्सप्रेसवे से

मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर डबल-डेकर टूरिस्ट बस में लगी आग

खालापूर, यशभारत। मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे पर खालापूर टोल प्लाजा के पास गुरुवार सुबह एक डबल-डेकर टूरिस्ट बस में अचानक आग लग गई। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, बस पुणे की ओर जा रही थी और करीब सुबह 7.37 बजे उसने आग लगी। बस में आग लगते ही यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना संबंधित अधिकारियों को दी गई, जिसके बाद मौके पर राहत एवं बचाव कार्य शुरू किए जाने की जानकारी है। आग लगने के कारणों का फिलहाल स्पष्ट पता नहीं चल पाया है। हदसे के चलते एक्सप्रेसवे पर यातायात प्रभावित होने की संभावना है। प्रशासन और संबंधित एजेंसियां घटना की परिस्थितियों की जांच कर रही है। फिलहाल आग से हुए नुकसान और किसी के हाताहत होने की विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है।



तेलंगाना में भी बस में आग लगी

तेलंगाना के हैदराबाद में श्रीरैलम गा रही एक बस में आग लग गई। हदसा करनगुटा हनुमान गॉटिर के पास हुआ। अधिकारियों की घटना की सूचना बुधवार देर रात करीब 2:15 बजे मिली। बस में सवार सभी 38 यात्री सुरक्षित बाहर निकल गए। हदसे में किसी के घायल होने की जानकारी नहीं है।

मिलने पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना का संज्ञान लिया। उन्होंने मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए अधिकारियों को घायलों के समुचित इलाज की व्यवस्था करने के निर्देश दिए।

बैंक हड़ताल से पहले केंद्र का बड़ा फैसला

25 सितंबर को ही खाते में आएगा वेतन-पेंशन 27 को रविवार के बावजूद खुलेंगे सरकारी बैंक

जबलपुर, यशभारत। देशभर में 28 से 30 सितंबर तक प्रस्तावित तीन दिवसीय राष्ट्रव्यापी बैंक हड़ताल से पहले केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए बड़ा फैसला लिया है। हड़ताल के दौरान बैंकिंग और वित्तीय लेन-देन प्रभावित होने की आशंका को देखते हुए सितंबर माह का वेतन और पेंशन निर्धारित समय से पहले 25 सितंबर 2026, शुक्रवार को ही जारी करने के निर्देश दिए गए हैं। सरकार के इस फैसले से केंद्र के लाखों कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को राहत मिलने की उम्मीद है। वित्त मंत्रालय के व्यव विभाग के महालेखा निंत्रक कार्यालय की ओर से जारी कार्यालय ज्ञापन में कहा गया है कि प्रस्तावित बैंक हड़ताल के कारण वित्तीय लेन-देन में व्यवधान की संभावना है। इसी को ध्यान में रखते हुए वेतन और पेंशन का भुगतान अग्रिम रूप से करने का निर्णय लिया गया है। इसके साथ ही सितंबर माह के अंत में चालू तिमाही भी समाप्त हो रही है, इसलिए किसी भी प्रकार की वित्तीय देरी से बचने के लिए संबंधित विभागों को आवश्यक भुगतान समय से निपटाने के निर्देश दिए गए हैं।

रक्षा, डाक और दूरसंचार कर्मचारियों को भी लाभ

सरकार के निर्णय के दायरे में केंद्र सरकार के सभी सिविल कर्मचारी, औद्योगिक कर्मचारी और पेंशनभोगी आएंगे। रक्षा, डाक और दूरसंचार विभाग के कर्मचारियों को भी इसका लाभ मिलेगा। 25 सितंबर को किया जाने वाला भुगतान अग्रिम भुगतान माना जाएगा। बाद में महीने का अंतिम हिसाब-किताब पूरा होने पर यदि किसी राशि का समायोजन आवश्यक हुआ तो उसे अक्टूबर 2026 के वेतन या पेंशन में समायोजित किया जाएगा।

आम बैंक ग्राहकों के लिए भी बड़ी व्यवस्था

बैंक हड़ताल से ठीक पहले पड़ रहे सप्ताहांत को देखते हुए सरकार ने आम बैंक ग्राहकों के लिए भी बड़ी व्यवस्था की है। 27 सितंबर, रविवार को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक खुले रहेंगे। सामान्य तौर पर रविवार को बैंक शाखाएं



बंद रहती हैं, लेकिन हड़ताल के दौरान ग्राहकों को बैंकिंग सेवाओं में परेशानी से बचाने के लिए इस दिन शाखाओं को संचालित करने का निर्णय लिया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से रविवार को बैंक शाखाओं के साथ प्रशासनिक कार्यालयों, एटीएम से संबंधित शाखाओं और करेंसी चेस्ट को भी पूर्ण तरह सक्रिय रखने की अनुमति दी गई है। इसका उद्देश्य हड़ताल शुरू होने से पहले अधिक से अधिक जरूरी बैंकिंग काम निपटाने का अवसर ग्राहकों को उपलब्ध कराना है।

यूनियनों से बातचीत, हड़ताल टालने की अपील

28 से 30 सितंबर तक प्रस्तावित हड़ताल को लेकर सरकार और बैंक प्रबंधन की ओर से बैंक यूनियनों के साथ बातचीत जारी है। सरकार ने यूनियनों से हड़ताल वापस लेने की अपील की है। वहीं, हड़ताल की स्थिति में आम जनता को आवश्यक बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए वैकल्पिक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने की कवायद भी की जा रही है। सितंबर के अंतिम सप्ताह में लगातार छुट्टियों और प्रस्तावित तीन दिवसीय हड़ताल के कारण बैंकिंग कामकाज पर असर पड़ने की आशंका के बीच सरकार का अग्रिम वेतन-पेंशन भुगतान और रविवार को बैंक खोलने का फैसला महत्वपूर्ण माना जा रहा है। अब निगाहें 28 सितंबर से शुरू होने वाली प्रस्तावित हड़ताल और सरकार-यूनियनों के बीच चल रही बातचीत के अगले दौर पर टिकी हैं।

चिटफंड मामले में निवेशकों ने दी गलत जानकारी अटके भुगतान

यश ड्रीम रियल एस्टेट के 4,601 निवेशकों को हुआ था भुगतान, गलत बैंक जानकारी के कारण अटकी 617 निवेशकों की राशि

दुर्ग, यशभारत। चिटफंड कंपनी यश ड्रीम रियल एस्टेट में निवेश कर अपनी रकम का इंतजार कर रहे निवेशकों के लिए जिला प्रशासन ने महत्वपूर्ण सूचना जारी की है। पहले चरण में 4,601 निवेशकों को राशि का भुगतान किया जा चुका है, लेकिन 617 निवेशकों की बैंक संबंधी जानकारी गलत होने के कारण उनके खातों में रकम ट्रांसफर नहीं हो सकी।

गलत बैंक जानकारी बनी अड़चन नहीं पहुंची रकम-

617 के खातों में अब तक नहीं पहुंची रकम

जिला प्रशासन के अनुसार 6 फरवरी 2026 को पहले बैच में 4,601 निवेशकों को राशि का वितरण किया गया था। जांच के दौरान 617 निवेशकों के बैंक संबंधी दस्तावेजों में जानकारी गलत या अपूर्ण पाए जाने के कारण भुगतान की प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकी।

चिटफंड शाखा में जमा करें दस्तावेज- जिन निवेशकों के खाते में राशि नहीं पहुंची है, वे कलेक्टर कार्यालय की चिटफंड शाखा, कक्ष क्रमांक

30 में संपर्क कर अपने बैंक संबंधी आवश्यक दस्तावेज जमा कर सकते हैं। दस्तावेजों के सत्यापन के बाद जिला प्रशासन द्वारा उनकी अटकी हुई राशि के भुगतान की आगे की कार्रवाई की जाएगी। निवेशक अपने नाम की जानकारी क्यूआर कोड के माध्यम से जारी सूची में भी देख सकते हैं। जिला प्रशासन ने संबंधित निवेशकों से बैंक दस्तावेज जमा कर प्रक्रिया पूरी करने की अपील की है।



एसआईआर पर घिरा चुनाव आयोग, अंदर से भी उठे सवाल

गरमाई सिवासत

नई दिल्ली, यशभारत। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SAR) को लेकर चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सियासी घमासान तेज हो गया है। द इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि नवंबर 2025 से अगस्त 2026 के बीच चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने विभिन्न फैसलों और आदेशों पर कम से कम 14 लिखित आपत्तियां दर्ज कीं। रिपोर्ट के मुताबिक, आपत्तियां SAR, फॉर्म-6 में बदलाव, मतदाता सूची में नाम जोड़ने-हटाने, अपील और चुनावी डेटा तक पहुंच जैसे मुद्दों से जुड़ी थीं।

रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया कि कुछ मामलों में दोनों आयुक्तों ने सवाल उठाया कि उनकी जानकारी के बिना फैसले और आदेश कैसे जारी किए गए। इन दावों ने चुनाव आयोग के भीतर निर्णय प्रक्रिया और पारदर्शिता को लेकर सवाल खड़े कर दिए। हालांकि, चुनाव आयोग ने अंदरूनी मतभेद को खबरों को साफ तौर पर खारिज किया है। आयोग के सूत्रों के अनुसार, अलग- अलग मुद्दों पर आयुक्तों की व्यक्तिगत राय अलग हो सकती है, लेकिन स्कूट समेत सभी अंतिम फैसले तीनों चुनाव आयुक्तों की सहमति से लिए गए हैं।

सांसद विवेक तन्खा की तीखी प्रतिक्रिया लोकतंत्र को नष्ट होने नहीं दे सकते

चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर उठे सवालों के बीच कांग्रेस सांसद और वरिष्ठ अधिवक्ता विवेक तन्खा ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। चुनाव आयोग के भीतर कथित मतभेदों और बड़ी संख्या में मतदाताओं के नामों को लेकर सामने आई मीडिया रिपोर्ट के बाद तन्खा ने निर्वाचन संस्थाओं की भूमिका और लोकतांत्रिक प्रक्रिया की पारदर्शिता पर गंभीर चिंता जताई। तन्खा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि जो बातें अब तक अप्रत्यक्ष थीं, वे अब प्रत्यक्ष होती दिख रही हैं। उन्होंने मतदाता सूची से 13करोड़ नाम हटाए जाने के दावे का उल्लेख करते हुए सवाल खड़ा किया कि यदि करोड़ों नाम झप्पट सूची से बाहर हो रहे हैं, तो इसका लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर क्या असर पड़ेगा। उन्होंने चुनाव आयुक्तों के बीच कथित असहमति का भी जिक्र किया और कहा कि अब बोलने का समय आ गया है। तन्खा ने अपनी चिंता को लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता से जोड़ते हुए कहा कि देश अपने लोकतंत्र को नष्ट होने की अनुमति नहीं दे सकता। उनके बयान में निर्वाचन प्रक्रिया की निष्पक्षता, मतदाता के अधिकार और संस्थागत जवाबदेही को लेकर चिंता प्रमुख रही। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने आयोग सेSIR, फॉर्म-6, मतदाता डेटाबेस और गोवा के 97 मतदाताओं सहित कई मामलों पर दस्तावेजी स्पष्टीकरण मांगा है।



‘वेलकम’ के बल्लू नहीं रहे, अभिनेता मुश्ताक खान का निधन

56 साल की उम्र में ली अंतिम सांस, पांच साल से कैंसर से जूझ रहे थे



56 वर्षीय अभिनेता पिछले कुछ समय से कैंसर से जूझ रहे थे। उनके निधन की खबर से हिंदी फिल्म और टेलीविजन जगत में शोक की लहर है। मुश्ताक खान ने अपने करियर में कई फिल्मों और टीवी धारावाहिकों में काम किया और खास तौर पर अपने ह्रास्य तथा सहायक किरदारों के

नई दिल्ली, एजेंसी। हिंदी सिनेमा के जाने-माने अभिनेता मुश्ताक खान का निधन हो गया।

कैंसर की बीमारी का पता चला था। हाल ही में बीमारी दोबारा उभरने के बाद उनकी तबीयत लगातार बिगड़ती चली गई। उपचार के दौरान उनका निधन हो गया।

मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले के बैहर कस्बे में जन्मे मुश्ताक खान ने हिंदी फिल्मों के साथ टेलीविजन में भी अपनी अलग पहचान बनाई। वर्ष 2007 में

लिए पहचाने गए।

जानकारी के अनुसार, मुश्ताक खान पिछले करीब 15 दिनों से मुंबई के नानावती अस्पताल में भर्ती थे। बताया गया है कि उन्हें करीब पांच वर्ष पहले कैंसर की बीमारी का पता चला था। हाल ही में बीमारी दोबारा उभरने के बाद उनकी तबीयत लगातार बिगड़ती चली गई। उपचार के दौरान उनका निधन हो गया।

मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले के बैहर कस्बे में जन्मे मुश्ताक खान ने हिंदी फिल्मों के साथ टेलीविजन में भी अपनी अलग पहचान बनाई। वर्ष 2007 में

रिलीज हुई फिल्म ‘वेलकम’ में उन्होंने बल्लू का किरदार निभाया था। इस फिल्म में वह अक्षय कुमार, नाना पाटेकर, अनिल कपूर और पोंश रावल जैसे दिग्गज कलाकारों के साथ नजर आए थे। उनका वह किरदार दर्शकों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। मुश्ताक खान ने ‘हेरा फेरी’, ‘हम हैं राही प्यार के’, ‘जोड़ी नंबर 1’ और ‘वाटेड’ सहित कई चर्चित फिल्मों में अभिनय किया। उन्होंने अपने करियर में मुख्य भूमिकाओं के बजाय सहायक और चरित्र भूमिकाओं के जरिए दर्शकों के बीच पहचान बनाई।

दिल्ली में नाबालिग से दुष्कर्म का

मामला, 12 दिन में चौथी घटना

सोशल मीडिया पर दोस्ती के बाद होटल में

बुलाने का आरोप, आरोपी फरार

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के वजीराबाद इलाके में एक होटल में नाबालिग लड़की से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पुलिस के अनुसार, आरोपी और पीड़िता दोनों वजीराबाद क्षेत्र के रहने वाले हैं। आरोप है कि आरोपी ने सोशल मीडिया के जरिए नाबालिग से दोस्ती की और मंगलवार को उसे एक होटल में बुलाया। घटना के बाद नाबालिग घर पहुंची और परिजनों को पूरी जानकारी दी। इसके बाद परिवार ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल परीक्षण कराया और उसका बयान में लिया। मेडिकल रिपोर्ट और बयान के आधार पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। घटना के बाद से आरोपी फरार बताया जा रहा है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि नाबालिग को होटल में प्रवेश कैसे मिला। जांच के तहत होटल का रजिस्टर, सीसीटीवी फुटेज और अन्य रिकॉर्ड खंगाले जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि दिल्ली में पिछले 12 दिनों में नाबालिग से दुष्कर्म का यह चौथा मामला है। रिपोर्ट में उद्धृत आंकड़ों के अनुसार, पॉक्सो मामलों में करीब 97 प्रतिशत मामलों में आरोपी पीड़ित को पहले से जानता होता है।

ड्रोन, मचाव और 800 जवान... पर 'जाम' छलकाने वालों पर पुलिस मेहरबान?

राजनांदगांव पुलिस के सुरक्षा प्लान से 'मदिरा' का जिक्र गायब शहर पूछ रहा- क्या विसर्जन झांकी में शराबियों को मिल गई है अघोषित छूट?

■ यश भारत

राजनांदगांव। गणेश विसर्जन और 25 सितंबर की रात निकलने वाली ऐतिहासिक झांकियों को लेकर राजनांदगांव पुलिस ने अपना 'अभेद्य' सुरक्षा खाका खींच दिया है। 800 जवानों की भारी-भरकम फौज, आसमान में मंडराते 4 ड्रोन, 10 गिरगनी मचाव, 'One Cop-One Pandal' का फॉर्मूला और जेल से छूटे बदमाशों की कुंडली—प्रेस नोट में पुलिसिया चाक-चौबंद व्यवस्था की चमक ऐसी है कि परिदा भी पर न मार सके।

लेकिन, इस लंबे-चौड़े फरमान को पढ़कर शहर का आम नागरिक माथा

पकड़ रहा है और 'मदिरा प्रेमी' मन ही मन गदगद है। कारण? पुलिस की पूरी विज्ञप्ति से उस सबसे बड़े 'खलनायक' का नाम ही नदारद है, जो हर साल झांकियों की रात फिजा में जहर धोलता है—यानी 'शराब'।

अपराध रोकना है, पर अपराध की 'जड़' पर खामोशी क्यों?

पुलिस ने अपनी विज्ञप्ति में चाकूबाजी, आपसी रंजिश, विवाद और कानून-व्यवस्था बिगड़ने की आशंका तो बड़े गाढ़े अक्षरों में जताई है। मगर खाकी यह भूल गई (या शायद नजरअंदाज कर गई) कि झांकियों की रात चलने वाले चाकू और टूटने वाले सिर किसी



वैचारिक मतभेद का नतीजा नहीं होते,

बल्कि शराब के नशे में डीजे के बेस पर

थिरकते सिरफिरों की 'शराबी बकझक' से शुरू होते हैं।

जब तक बोलत अंदर नहीं जाती, तब तक किसी में इतनी 'हिम्मत' नहीं आती कि वह सर्राह हथियार लहरा दे। सवाल यह उठता है कि जब पुलिस को विवाद और चाकूबाजी की इतनी फिक्र है, तो शराबियों पर नकेल कसने के लिए एक शब्द तक क्यों नहीं फूटा? क्या पुलिस मान चुकी है कि नशे में धुत हुड़दंगी अब शांति दूत बन चुके हैं?

मदिरा प्रेमियों में गजब का उत्साह: "चलो, अपना काम तो आसान हुआ!"

प्रेस नोट जारी होने के बाद शहर के गलियारों में जबरदस्त चर्चा है। डीजे की धुन पर जाम छलकाकर हुड़दंग मचाते वालों के बीच यह संदेश तेर रहा है कि जब पुलिस ने शराब को लेकर कोई चेतावनी ही नहीं दी, तो इसका मतलब रास्ता साफ है!

शहर का जागरूक वर्ग अब व्यंग्य कसते हुए पूछ रहा है— क्या इस बार पुलिस ने शराबियों को 'विशेष पास'

जारी कर दिया है?

क्या विसर्जन झांकी के दौरान 'बीथ एनालाइजर' थानों की अलमारियों में भी धूल फाँकेगे?

क्या अवैध शराब बेचने वाले कोचियों और नशेड़ियों को यह मान लेना चाहिए कि फ्राई डे यानी 25 की रात उनके लिए 'ड्राई डे' नहीं बल्कि 'फ्री डे' है?

सुप्रीम कोर्ट का डीजे याद रहा, पर आबकारी का होश नहीं?

पुलिस ने डीजे संचालकों को सुप्रीम कोर्ट के ध्वनि मानकों और कोलाहल अधिनियम का पाठ पूरी मुस्तैदी से पढ़ाया है। लाउडस्पीकर की आवाज कितनी डेसिबल होगी, इसकी पूरी गणित बिठा ली गई, लेकिन झांकी मार्ग पर शराबियों का जो 'शोर' और 'उत्पात' बरपेगा, उस पर कोई पैमाना तय नहीं हुआ।

हर साल का अनुभव गवाह है कि रात गहराते ही विसर्जन मार्ग पर शराब की खाली बोतलें, लड़खड़ाते कदम और अश्लील फब्तियाँ आम हो जाती हैं।

महिलाएं और परिवार जो बप्पा के दर्शन करने निकलते हैं, वे इसी शराबी हुड़दंग के डर से आधी रात से पहले ही घर लौटने को मजबूर हो जाते हैं।

आसमान में ड्रोन उड़ाना और मचाव पर चढ़कर दूरबीन लगाना आधुनिक पुलिसिंग का हिस्सा हो सकता है, लेकिन जमीन पर व्यवस्था बनाए रखने के लिए उस शराब पर प्रहार करना होगा जो कानून के चिथड़े उड़ाने का काम करती है।

राजनांदगांव की जनता अब पुलिस कप्तान सुश्री अंकिता शर्मा से यह स्पष्टीकरण चाहती है, क्या झांकी मार्ग पर शराब पीकर उपद्रव करने वालों पर सख्ती होगी, या फिर यह मान लिया जाए कि पुलिस का सुरक्षा घेरा शराब की बोतल के आगे नतमस्तक हो गया है? पुलिस को चाहिए कि वह तत्काल संशोधित दिशा-निर्देश जारी कर शराबियों, कोचियों और झांकी में मदिरा सेवन कर शामिल होने वालों पर सीधी कानूनी कार्रवाई का चाबुक चलाए, ताकि बप्पा की विदाई वाकई मंगलमय और सुरक्षित रह सके।



आयुर्वेद दिवस पर निःशुल्क आयुष चिकित्सा एवं औषधि वितरण शिविर संपन्न

■ यश भारत

राजनांदगांव। 11वां आयुर्वेद दिवस पर शासकीय आयुष पॉलीक्लीनिक दीनदयाल नगर चिखली राजनांदगांव में स्वस्थ कल के लिए आयुर्वेद थीम पर निःशुल्क आयुष चिकित्सा एवं औषधि वितरण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महापौर श्री मधुसूदन यादव ने कहा कि पूरी दुनिया में आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी एवं योग की व्यापक मान्यता है। आयुष चिकित्सा पद्धति के माध्यम

की व्यवस्था होती है।

आयुष दिवस के अवसर आयोजित आयुष चिकित्सा एवं औषधि वितरण शिविर में 275 मरीजों स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। शिविर में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, नेत्र परीक्षण, रक्त परीक्षण, अर्श, भगंदर एवं अन्य रोगों का परीक्षण कर चिकित्सा एवं निःशुल्क औषधि का वितरण किया गया। इस अवसर पर काढा वितरण भी किया गया। कार्यक्रम में समाज सेवी श्री कोमल सिंह राजपूत, प्रभारी सदस्य स्वास्थ्य विभाग श्री शंकी बग्गा, श्री तरुण लहरवानी, प्रभारी सदस्य जल



विभाग श्री सुनील साहू, पार्श्व श्री शिव वर्मा, एलडरमैन श्रीमती श्रुति अनिस बोरकर, जिला आयुष अधिकारी डॉ. शिला मिश्रा सहित अन्य जन प्रतिनिधि, अधिकारी एवं कर्मचारी एवं

बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। शिविर में डॉ. सुरेन्द्र कुमार मेथ्राम, डॉ. अनमोल गुप्ता, डॉ. नम्रता कोसले एवं महावीर आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज सुन्दरा से स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉ. सिमरन, शल्य विशेषज्ञ डॉ. अनिशा खंडेलवाल, होम्योपैथी चिकित्सा डॉ. हर्षा बरैया, योग चिकित्सा डॉ. भारती यादव, लाईफ स्टाईल से डॉ. आनन्द सिंह भारद्वाज सेवा दी गई।

कलेक्टर ने सुंदरा के मिनी स्टेडियम को बच्चों और युवाओं के लिए बेहतर खेल सुविधा के रूप में विकसित करने दिए निर्देश

■ यश भारत

राजनांदगांव। कलेक्टर श्री जितेन्द्र यादव ने आज सुंदरा स्थित मिनी स्टेडियम का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माण कार्य की भौतिक प्रगति का जायजा लेते हुए इसे शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि मिनी स्टेडियम का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करते हुए ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों एवं युवाओं को खेल और प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

कलेक्टर को बताया गया कि मिनी स्टेडियम का उपयोग प्रतिदिन लगभग 200 से 250 बच्चों द्वारा किया जा सकता है। कलेक्टर ने स्टेडियम परिसर में बच्चों के लिए पृथक एवं सुविधायुक्त शौचालय, चेंजिंग रूम तथा आवश्यक मूलभूत सुविधाएं विकसित करने के निर्देश दिए। उन्होंने खेल प्रशिक्षण के लिए आने वाले बच्चों के खान-पान एवं स्वास्थ्य सुविधाओं पर भी विशेष ध्यान देने कहा। आवश्यकता अनुसार स्थानीय स्तर पर व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा स्वास्थ्य संबंधी आपात स्थिति के लिए समुचित प्रबंध रखने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने मिनी स्टेडियम में रात्रिकालीन खेल एवं वॉकिंग-रनिंग



पीएम सूर्य घर योजना की प्रगति की ली जानकारी

कलेक्टर ने ग्राम पंचायत सचिव से प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की प्रगति की जानकारी ली। सचिव ने बताया कि अब तक ग्राम में 25 घरों में सोलर पैनल स्थापित किए जा चुके हैं। कलेक्टर ने योजना के प्रति ग्रामीणों में जागरूकता बढ़ाते हुए अधिक से अधिक घरों में सोलर पैनल स्थापित करने के निर्देश दिए। उन्होंने लक्ष्य निर्धारित करते हुए सोलर पैनल स्थापित कराने तथा घर-घर सर्वे एवं हितग्राहियों को योजना का लाभ दिलाए कहा। साथ ही स्थापित सोलर पैनलों के रख-रखाव पर भी ध्यान देने के निर्देश दिए।

की सुविधा के लिए प्रकाश व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्टेडियम के तीनों कोनों में लाइट लगाने तथा विद्युत कनेक्शन के लिए ग्राम पंचायत से समन्वय करने कहा। उन्होंने परिसर की दीवारों पर एथलेटिक्स एवं खेल गतिविधियों से संबंधित आकर्षक पेंटिंग कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने खेल

प्रतिभाओं को नियमित प्रशिक्षण देने तथा आसपास के क्षेत्रों के बच्चों को भी मिनी स्टेडियम से जोड़ने कहा।

पीएम आवास योजना के लंबित आवास शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश

कलेक्टर ने प्रधानमंत्री आवास

सौर ऊर्जा की ओर बढ़ता बघेरा

- सौर ऊर्जा की ओर बढ़ता बघेरा, 100 घरों तक सोलर पहुंचाने का संकल्प
- 3 किलोवाट सोलर पैनल से प्रीति साहू का बिजली बिल हुआ शून्य
- कलेक्टर ने ग्रामीणों को योजना का लाभ लेने के लिए किया प्रेरित

■ यश भारत

राजनांदगांव। कलेक्टर श्री जितेन्द्र यादव ने राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम बघेरा में प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के क्रियान्वयन का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने हितग्राहियों से सीधे संवाद कर सोलर पैनल से मिल रहे लाभ और बिजली बिल में हो रही बचत की जानकारी ली। कलेक्टर ने ग्रामीणों को अधिक से अधिक संख्या में सौर ऊर्जा अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए पात्र परिवारों को प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना से जोड़ने के लिए विशेष रूप से जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए।

सोलर पैनल लगा तो 1500 रुपए का बिजली बिल हुआ शून्य

ग्राम बघेरा निवासी श्रीमती प्रीति साहू ने बताया कि उन्होंने लगभग दो माह पूर्व अपने घर पर 3 किलोवाट का सोलर पैनल लगवाया था।

उन्होंने बताया कि सोलर पैनल लगने से पहले उनका मासिक बिजली



बिल करीब 1000 से 1500 रूपए तक आता था, लेकिन अब उनका बिजली बिल शून्य हो गया है। उन्होंने योजना से मिले लाभ को साझा करते हुए बताया कि सौर ऊर्जा अपनाने से उनके परिवार को हर महीने बिजली खर्च में सीधी राहत मिल रही है। इसी तरह ग्राम बघेरा निवासी श्री अवधलाल यादव ने भी अपने घर पर 3 किलोवाट का सोलर पैनल स्थापित कराया है। ग्राम की सरपंच श्रीमती ऐश्वर्या देशमुख ने बताया कि उन्होंने स्वयं भी अपने निवास पर 3 किलोवाट का सोलर पैनल लगवाया है।

13 घरों में इंस्टॉलेशन पूर्ण, 100 का लक्ष्य

ग्राम पंचायत सरपंच ने बताया कि ग्राम बघेरा में अब तक 13 घरों में सोलर पैनल इंस्टॉल किए जा चुके हैं और 27 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। आगामी दो माह में 100 घरों में सोलर इंस्टॉलेशन का लक्ष्य रखा गया है। ग्रामीणों में सौर ऊर्जा

के प्रति रूचि बढ़ रही है और योजना का लाभ लेने के लिए लगातार आवेदन प्राप्त हो रहे हैं।

अधिक से अधिक पात्र परिवारों को योजना से जोड़ने के लिए निर्देश

कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की जानकारी गांव-गांव तक पहुंचाते हुए पात्र परिवारों को योजना के लाभ, आवेदन प्रक्रिया एवं सब्सिडी की जानकारी उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि योजना से मिलने वाले लाभ का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए तथा जिन परिवारों ने सोलर पैनल लगवाए हैं, उनके अनुभवों को अन्य ग्रामीणों तक पहुंचाकर उन्हें भी सौर ऊर्जा अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने ग्राम बघेरा में निर्धारित 100 सोलर इंस्टॉलेशन के लक्ष्य को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए आवश्यक समन्वय सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

यश भारत

दुर्ग व्यूरो चीफ

दैनिक यश भारत समाचार पत्र रायपुर के लिये दुर्ग का ब्यूरो चीफ शमशेर खान को नियुक्त किया गया है। अतः समाचार, प्रेस विज्ञापितियाँ, कार्यक्रमों के लिये आमंत्रण एवं विज्ञापन तथा समाचार पत्र के लिये संपर्क करें।

शमशेर खान

ब्यूरो चीफ 'यश भारत' (दुर्ग)



यश भारत

बस्तर संभाग

दैनिक यश भारत समाचार पत्र रायपुर के लिये बस्तर संभाग का ब्यूरो चीफ रवि दुबे को नियुक्त किया गया है। अतः समाचार, प्रेस विज्ञापितियाँ, कार्यक्रमों के लिये आमंत्रण एवं विज्ञापन तथा समाचार पत्र के लिये संपर्क करें।

रवि दुबे

ब्यूरो चीफ 'यश भारत' (बस्तर संभाग)
मो. 7987621085, 9424281645

यश भारत

राजनांदगांव

यश भारत समाचार पत्र द्वारा मनमोहन शर्मा, निवासी जूनी हटरी, राजनांदगांव को जिला ब्यूरो चीफ नियुक्त किया गया है। समाचार, प्रेस विज्ञापित, शासकीय कार्यक्रम, प्रेस आमंत्रण, विज्ञापन एवं समाचार पत्र के लिए संपर्क करें।

मनमोहन शर्मा

जिला ब्यूरो चीफ, यश भारत
मो. 9425246107



भारत में पारिवारिक सामूहिक हत्याकांड: गंभीर चिंता का विषय

भारत में परिवार के भीतर एक साथ कई लोगों की हत्या या सामूहिक मौत की घटनाएं समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। ऐसी घटनाओं के पीछे अक्सर पारिवारिक कलह, आर्थिक संकट, मानसिक तनाव, संपत्ति विवाद, नशे की समस्या और अंधविश्वास जैसे कई कारण सामने आते हैं। हालांकि, किसी घटना के पीछे एक ही कारण मान लेना उचित नहीं है। आर्थिक संकट और कर्ज ऐसे मामलों में महत्वपूर्ण कारक हो सकते हैं। व्यापार में भारी नुकसान, कर्ज, सट्टेबाजी या निवेश में बड़ी आर्थिक क्षति से व्यक्ति अत्यधिक तनाव में आ सकता है। इसके चेतावनी संकेत हैं-लगातार पैसों की चिंता, परिवार से आर्थिक स्थिति छिपाना, अचानक निराश या चिड़चिड़ा रहना, नैकरी या कारोबार से जुड़ी गंभीर परेशानी और भविष्य को लेकर निराशाजनक बातें करना।

पारिवारिक कलह और संपत्ति विवाद भी हिंसा का कारण बन सकते हैं। जमीन-जायदाद, वैवाहिक संबंधों में तनाव या लंबे समय से चले आ रहे विवाद स्थिति को गंभीर बना सकते हैं। बार-बार धमकी देना, अत्यधिक शक करना, गुस्से में चीजें तोड़ना, परिवार के सदस्यों को नियंत्रित करना या हिंसा की बात करना गंभीर चेतावनी संकेत माने जाने चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी भी जोखिम बढ़ा सकती है। अत्यधिक तनाव, गंभीर मानसिक बीमारी, नशे की समस्या या गुस्से पर नियंत्रण न होना व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। अचानक व्यवहार में बड़ा बदलाव, सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ना, असामान्य डर या संदेह, नींद में भारी बदलाव, अत्यधिक उत्तेजना या खुद अथवा दूसरों को नुकसान पहुंचाने की बात को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। हालांकि, मानसिक बीमारी को हिंसा का पर्याय मानना गलत है। अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र से जुड़े विश्वास भी कुछ मामलों में गंभीर परिणाम दे सकते हैं। किसी व्यक्ति का परिवार को खतरनाक धार्मिक अनुष्ठानों के लिए मजबूर करना या वास्तविक समस्याओं के बजाय अलौकिक कारणों को जिम्मेदार बताना चेतावनी का संकेत हो सकता है। इन संकेतों को देखकर परिवार को व्यक्ति को अकेला छोड़ने के बजाय शांतिपूर्वक बातचीत, भरोसेमंद लोगों की मदद और जरूरत पड़ने पर मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ या कानूनी सहायता लेनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति से तत्काल हिंसा का खतरा हो, तो परिवार को पहले अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए स्थानीय पुलिस या आपातकालीन सहायता से संपर्क करना चाहिए। ऐसी घटनाओं की रोकथाम केवल घटना के बाद कार्रवाई से नहीं, बल्कि समय रहते खतरे के संकेत पहचानने, संवाद बढ़ाने और सहायता उपलब्ध कराने से संभव है।



आज का राशिफल	
पंचांग:- 25 सितंबर 2026 दिन- शुक्रवार, माह- भाद्र शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् 2083	ज्योतिषाचार्य विलास लोकेश व्यास
मेघ दिवन खुशनुमा रहने वाला है किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है	वृष पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है धैर्य के साथ आगे बढ़े
मिथुन आज का दिन व्यापार के लिए कोई नई योजना बनाने के लिए है सफलता मिलेगी	कर्क आज का दिन रचनात्मक कार्य करने में व्यतीत होने वाला है अपनी सुख सुविधाओं के सामान पर खर्च कर सकते हैं
सिंह दिन बुद्धि व विवेक से निर्णय लेने के लिए रहने वाला है आत्मविश्वास में वृद्धि होगी	कन्या विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है आत्मिक तनाव को कम करने की कोशिश करें
तुला निवेश करने से पहले अच्छी तरह सोच समझ ले बड़ों की सलाह को मानकर कार्य करें	वृश्चिक अजनबियों से सावधानी बरते किसी के भी बहकावे में ना आए
धनु दिल लाभदायक रहने वाला है मान सम्मान में वृद्धि होगी	मकर अटका हुआ कार्य पूरे होने के संकेत दिख रहे हैं मेहनत करें सफलता मिलेगी
कुंभ दिन भर आलस महसूस कर करेंगे कार्य पूरे होने में रुकावट आ सकती है	मीन पारिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा दिन अच्छा व्यतीत करेंगे

विचार प्रवाह

रजत में चमका मीराबाई का सपना

मंच पर वजन उठाते हुए मीराबाई चानू के सामने केवल लोहे की छड़ नहीं थी। उस पर वर्षों की मेहनत, चोटों से लौटना का संघर्ष और एक ऐसा सपना रखा था, जो उनके शानदार करियर के बावजूद अधूरा था। बुधवार को एशियाई खेलों में महिलाओं की 49 किलोग्राम भारवर्ग की स्पर्धा में जब उन्होंने कुल 198 किलोग्राम वजन उठाकर रजत पदक जीता, तो उनके खाने में एक और पदक जुड़ा। लेकिन इस पदक का अर्थ पदक तालिका की एक पंक्ति से कहीं बड़ा है।

मीराबाई ने सैच में 87 किलोग्राम और क्लीन एंड जर्क में 111 किलोग्राम वजन उठाया। यह आंकड़ा उनकी उपलब्धि का सबसे सीधा परिचय है। मगर खेल की असली कहानी अक्सर आंकड़ों के बाहर लिखी जाती है। वह उन घंटों में लिखी जाती है, जब खिलाड़ी अकेले अभ्यास करता है; उन दिनों में जब चोट के कारण मैदान से बाहर रहना पड़ता है; और उन रातों में जब पिछली असफलता अगले प्रयास पर भारी पड़ती है।

मीराबाई के लिए एशियाई खेलों का पदक ऐसा ही एक अधूरा अध्याय था। 2014 के एशियाई खेलों में वह नौवें स्थान पर रही थीं। 2018 में चोट ने उन्हें प्रतियोगिता से दूर कर दिया। 2023 के हांगझोउ एशियाई खेलों में वह चौथे स्थान पर रहीं। वहां जांच की चोट ने उनके क्लीन एंड जर्क को भी प्रभावित किया। एक खिलाड़ी के लिए चौथा स्थान कभी-कभी सबसे कठिन स्थान होता है-पदक सामने दिखाई देता है, लेकिन हाथ नहीं आता।इस बार वह दूरी खत्म हुई। पदक जीतने के बाद मीराबाई ने कहा कि आखिरकार उन्होंने वह पदक जीत लिया, जिसका उन्हें कई वर्षों से इंतजार था। उन्होंने बताया कि जब से उन्होंने भारोत्तोलन शुरू किया था, तब से एशियाई खेलों का पदक उनका सपना था। आज सपना पूरा हुआ और उन्हें खुद पर गर्व है।

इन शब्दों को सुनते हुए शायद यह समझना जरूरी है कि बड़े खिलाड़ी के लिए भी हर उपलब्धि एक जैसी नहीं होती। ओलंपिक रजत पदक उनके पास है। विश्व चैंपियनशिप का स्वर्ण उनके नाम है। राष्ट्रमंडल खेलों में उन्होंने कई स्वर्ण जीते हैं। फिर भी एशियाई खेलों का पदक उनके लिए जरूरी था। क्योंकि खेल में उपलब्धियों की सूची जितनी लंबी होती जाती है, अपूरें हिस्से उतने ही स्पष्ट दिखाई देते हैं।

यही खेल का विरोधाभास है। बाहर से देखने वाले के लिए खिलाड़ी पदकों का नाम बन जाता है। खिलाड़ी



के भीतर मार हर पदक के पीछे एक अलग कहानी होती है।मीराबाई की कहानी में सफलता जितनी महत्वपूर्ण है, वापसी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। चोट से लौटना केवल शरीर को ठीक करना नहीं है। यह अपने ऊपर भरोसा फिर से खड़ा करना है। जब कोई खिलाड़ी एक बार असफल होता है तो अगली प्रतियोगिता में केवल प्रतिद्वंद्वी से मुकाबला नहीं करता, अपने पिछले परिणाम की स्मृति से भी लड़ता है। मीराबाई ने इस स्मृति को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनका रजत भारत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि भारोत्तोलन में एशियाई खेलों का पिछला पदक 1998 के बैंकॉक खेलों में कर्णम मल्लेश्वरी ने जीता था। करीब तीन दशक के इस अंतराल के बाद भारतीय भारोत्तोलन को फिर एशियाई खेलों के मंच पर पदक मिला है। मीराबाई के रजत ने उस लंबे इंतजार को भी समाप्त किया। लेकिन यहां से एक दूसरा सवाल उठता है। क्या किसी एक खिलाड़ी की असाधारण क्षमता और इच्छाशक्ति को ही हमारी खेल व्यवस्था की सफलता मान लिया जाए?

पदक जीतने के बाद जश्न स्वाभाविक है। खिलाड़ी का सम्मान भी होना चाहिए। लेकिन पदक की चमक के पीछे जो व्यवस्था है, उस पर बात करना भी उतना ही जरूरी है। प्रशिक्षण की गुणवत्ता, खेल विज्ञान, पोषण, चोट से बचाव, पुनर्वास, प्रशिक्षकों की उपलब्धता और प्रतिभा की पहचान-ये वे चीजें हैं जो किसी खिलाड़ी की सफलता के पीछे चुपचाप काम करती हैं।

हम अक्सर अंतिम क्षण देखते हैं। खिलाड़ी ने कितना

72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों मे दिखी भारतीय सिनेमा की बहुभाषी और बहुरंगी तस्वीर

भारतीय सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है,बल्कि यह भारत की बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुरंगी सामाजिक चेतना का जीवंत दस्तावेज भी है। देश के अलग-अलग हिस्सों में बोली जाने वाली भाषाएँ, लोक परंपराएँ, सामाजिक संघर्ष,बदलते जीवन-मूल्य,आकांक्षाएँ और सपने जब



किसी एक प्रदेश की कहानी नहीं रह जाते. बल्कि पूरे भारत की सामूहिक अनुभूति का हिस्सा बन जाते हैं। 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का आयोजन इसी व्यापक भारतीय सिनेमाई चेतना को सामने लाने वाला अवसर बना। गुजरात के एकता नगर में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जाना अपने आप में इस समारोह को एक अलग राष्ट्रीय अर्थ देता है।राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का महत्व केवल पुरस्कार पाने वाले कलाकारों और फिल्मों तक सीमित नहीं है। यह भारतीय सिनेमा की उस रचनात्मक यात्रा का सम्मान है, जिसमें देश की अलग-अलग भाषाओं और क्षेत्रों के फिल्मकार अपने-अपने समाज की कहानियों को राष्ट्रीय मंच तक लेकर आते हैं। इस बार भी लगभग 400 फीचर फिल्मों ने 34 भाषाओं में और 161 गैर-फीचर फिल्मों ने 24 भाषाओं में पुरस्कारों के लिए अपनी दावेदारी प्रस्तुत की। इनमें से 22 फीचर फिल्मों और 23 गैर- फीचर फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए। यह संख्या बताती है कि भारतीय सिनेमा का विस्तार किसी एक भाषा, प्रदेश या शैली तक सीमित नहीं है।इस समारोह का सबसे भावपूर्ण क्षण दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से अभिनेता अनंत नाग को सम्मानित किया जाना रहा। वर्ष 2024 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित अनंत नाग ने अपने लंबे अभिनय जीवन की स्मृतियों को साझा करते हुए उस संघर्षपूर्ण यात्रा को याद किया, जिसने उन्हें रंगमंच से भारतीय सिनेमा तक पहुंचाया।आश्रम में बचपन बिताने से लेकर मुंबई पहुंचने और रंगमंच से जुड़ने तक का उनका सफर इस बात का प्रमाण है कि कला की दुनिया में बड़ी पहचान के पीछे वर्षों की साधना, संघर्ष और निरंतर सीखने की प्रक्रिया होती है। फिल्मों में आने से पहले लगभग 50 नाटकों में अभिनय का अनुभव उनके अभिनय जीवन की मजबूत बुनियाद बना। श्याम बेनेगल जैसे महत्वपूर्ण फिल्मकार के साथ काम करने के बाद उन्होंने कन्नड़ सिनेमा और बेंगलुरु को अपनी कर्मभूमि बनाया। पिछले वर्ष राष्ट्रपति द्वारा उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया जाना भी उनके दीर्घकालिक योगदान की राष्ट्रीय स्वीकृति का प्रमाण है।अनंत नाग की यात्रा भारतीय सिनेमा के उस स्वरूप को सामने लाती है,जिसमें कलाकार केवल पदें पर दिखाई देने वाला चेहरा नहीं होता, बल्कि वह अपने समय, समाज और संस्कृति का संवाहक भी होता है। एक कलाकार का जीवन कई पीढ़ियों को प्रभावित करता है। इसलिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का यह आग्रह विशेष महत्व रखता है कि फिल्म जगत से जुड़े लोग स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा दें और ऐसे पदार्थों के प्रचार से बचें जो समाज और विशेषकर युवाओं के लिए हानिकारक हो सकते हैं। कलाकारों की लोकप्रियता उन्हें सामाजिक जिम्मेदारी भी प्रदान करती है। युवा पीढ़ी अपने पसंदीदा कलाकारों के व्यवहार और संदेश से प्रभावित होती है। ऐसे में सिनेमा की सामाजिक भूमिका पदें से बाहर भी दिखाई देती है।राष्ट्रपति ने भारतीय सिनेमा को भारत की विविध भाषाओं, परंपराओं, आकांक्षाओं और संघर्षों का प्रतिबिंब बताते हुए रचनात्मक क्षेत्र में काम करने वाले छोटे कलाकारों, सहायकों और संघर्षरत कर्मियों की गरिमा तथा सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता पर भी बल दिया। यह पहलु अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि किसी फिल्म की सफलता के पीछे केवल अभिनेता, निर्देशक या निर्माता नहीं होते। पदों के पीछे काम करने वाले असंख्य तकनीशियन, सहायक कलाकार, लेखक, संपादक, कर्मचारी, कैमराकार और अन्य कर्मियों का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए इस पूरे तंत्र को सम्मान और सुरक्षा देना आवश्यक है। महिलाओं की सभी निर्णायक मंडलियों में भागीदारी बढ़ाने का संदेश भी सिनेमा के बदलते स्वरूप और अधिक समावेशी रचनात्मक व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत है।

एकता नगर में आयोजित यह समारोह अपने स्थान के कारण भी विशेष रहा। गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने दिल्ली से बाहर राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह आयोजित करने की परंपरा को महत्वपूर्ण बताते हुए इसे सरदार वल्लभभाई पटेल की राष्ट्रीय एकता की भावना से जोड़ा। एकता नगर स्वयं उस राष्ट्रीय एकता की स्मृति से जुड़ा स्थान है, जहाँ लौह पुरुष सरदार पटेल की विराट प्रतिमा देश की एकजुटता का संदेश देती है। ऐसे स्थान पर भारतीय सिनेमा का राष्ट्रीय सम्मान समारोह आयोजित होना इस तथ्य को रेखांकित करता है कि संस्कृति और सिनेमा भी देश को जोड़ने वाली शक्तियाँ हैं।इसी मौके पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने सिनेमा को समाज का प्रतिबिंब और संस्कृति का वाहक बताते हुए कहा कि यह मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने के साथ भारत की वैश्विक पहचान और सॉफ्ट पावर को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम है। आज भारतीय फिल्में केवल देश के दर्शकों तक सीमित नहीं हैं। भारतीय कथानक, संगीत, अभिनय और सांस्कृतिक संवेदनाएँ दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में दर्शकों तक पहुँच रही हैं। यही कारण है कि सिनेमा अब मनोरंजन उद्योग के साथ-साथ सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम भी बन चुका है।इस वर्ष के पुरस्कारों में भारतीय सिनेमा की विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई दी। सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मम्मूटी को 'ब्रामयुगम' और कार्तिक आर्यन को 'चंद्र चैपियन' के लिए संयुक्त रूप से दिया गया। सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार 'आर्टिकल 370' के लिए यामी गौतम को मिला। संजय मिश्रा को 'भक्षक' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता तथा सचाना नामीदास को 'महाराजा' और रोमाश्री वकांडी को 'मिथ्या' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का सम्मान मिला। 'आर्टिकल 370' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार मिला, जबकि रणवीर हुड्डा को 'स्वातंत्र्य वीर समाकर' के लिए निर्देशन की शुरुआत के लिए विशेष पहचान मिली। 'कल्कि 2898 एडी' को संपूर्ण मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय फिल्म और 'केप्टन मिस्टर' को राष्ट्रीय, सामाजिक तथा पर्यावरणीय मूल्यों को बढ़ावा देने वाली सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के रूप में सम्मानित किया गया।

(लेखक-विनोद सिंह तकियावाला)

रजत में चमका मीराबाई का सपना

इस बार एशियाई खेलों में पदक मिलने के बाद उन्होंने कहा कि वह नहीं रोईं। शायद हर खुशी आंसुओं से व्यक्त नहीं होती। कुछ खुशियां लंबे संघर्ष के बाद भीतर उतरकर एक शांत संतोष बन जाती हैं।

लेकिन मीराबाई के सामने अब एक और सवाल है—अगला लक्ष्य क्या है?

किसी खिलाड़ी का जीवन केवल उस दिन खत्म नहीं हो जाता जब वह पदक जीतता है। बल्कि कई बार पदक के बाद अपेक्षाएँ और बढ़ जाती हैं। देश उससे अगली जीत को उम्मीद करने लगता है। मीडिया उसकी हर प्रतियोगिता को परिणाम की कसौटी पर देखने लगता है। प्रशंसक भूल जाते हैं कि पदक जीतने वाला शरीर भी थकता है, चोटिल होता है और उसे विश्राम चाहिए। इसलिए खिलाड़ियों को केवल पदक मशौन समझना खेल की आत्मा को छोटा करना है। मीराबाई ने अर्जुन पुरस्कार का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कहा कि उनके पास यह पुरस्कार नहीं है और यदि सरकार उनके नाम पर विचार करती है तो उन्हें खुशी होगी। पुरस्कारों की अपनी प्रक्रिया और मानदंड हैं। फिर भी यह प्रसंग एक बड़े सवाल की ओर ध्यान खींचता है—क्या हम खिलाड़ियों के योगदान का मूल्यांकन केवल ताजा उपलब्धि से करते हैं, या उनके पूरे करियर को भी देखते हैं?

एक खिलाड़ी की पहचान केवल उसके सबसे हाल के पदक से नहीं बनती। उसके पीछे वर्षों का प्रदर्शन, निरंतरता और कठिन समय में की गई वापसी भी होती है। मीराबाई के मामले में यह निरंतरता साफ दिखाई देती है। उन्होंने असफलता के बाद वापसी की। चोट के बाद फिर प्रशिक्षण शुरू किया। विश्व मंच पर देश का प्रतिनिधित्व किया और अलग-अलग प्रतियोगिताओं में अपनी जगह बनाए रखी। एशियाई खेलों का रजत इसी लंबी यात्रा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

यहां हमें उन खिलाड़ियों को भी याद करना चाहिए जो पदक से कुछ कदम दूर रह जाते हैं। चौथा स्थान पाने वाला खिलाड़ी भी उतनी ही मेहनत करता है। जो फाइनल तक नहीं पहुंचता, उसकी कि अवसर मिलने पर लड़कियां किसी भी क्षेत्र में ऊंचाई हासिल कर सकती हैं। मीराबाई का रजत उन अनगिनत खिलाड़ियों के लिए भी एक संदेश है कि असफलता अंतिम उतर नहीं होती।

(लेखक-कुमार कृष्णन)

दीनदयाल उपाध्याय : साधारण जीवन, असाधारण विचार

कुछ व्यक्तित्व अपने जीवन की लंबाई से नहीं बल्कि अपने विचारों की गहराई और कर्मों की व्यापकता से इतिहास में स्थान बनाते हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय ऐसे ही व्यक्तित्व थे। साधारण जीवन जीते हुए उन्होंने भारतीय राजनीति, समाज और अर्थचिंतन को भारतीय संस्कृति और परंपरा से जो?ने का प्रयास किया। उनका जीवन सादगी, अनुशासन, संगठन, राष्ट्रसेवा और वैचारिक प्रतिबद्धता का उदाहरण रहा। उनकी जयंती केवल एक राजनीतिक व्यक्तित्व को याद करने का अवसर नहीं बल्कि उनके विचारों और सार्वजनिक जीवन की भूमिका को समझने का अवसर भी है। 25 सितंबर 1916 को मथुरा जिले के नगला चंद्रभान गांव में जन्मे दीनदयाल उपाध्याय का बचपन कठिन परिस्थितियों में बीता। कम उम्र में ही उन्होंने माता-पिता को खो दिया और उनका पालन-पोषण रिश्तेदारों के संरक्षण में हुआ। कठिनाइयों के बावजूद शिक्षा के प्रति उनका लगाव कम नहीं हुआ। वे प?ई में अत्यंत प्रतिभाशाली थे और विभिन्न स्तरों पर छात्रवृत्तियां प्राप्त करते रहे। पिलानी में शिक्षा के बाद उन्होंने कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज में अध्ययन किया। 1937 में छात्र जीवन के दौरान उनका संपर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ। आगे चलकर उन्होंने अपना जीवन पूर्णकालिक संगठनात्मक कार्य को समर्पित कर दिया। दीनदयाल उपाध्याय के लिए राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं थी, वे इसे समाज और राष्ट्र की सेवा का साधन मानते थे। 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना के समय वे उसके संगठन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका में आए और आगे चलकर पार्टी के अखिल भारतीय महामंत्री बने। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निधन के बाद संगठन को मजबूत करने और देशभर में उसका विस्तार करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1967 में वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। उनकी सबसे महत्वपूर्ण वैचारिक देन 'एकात्म मानववाद' मानी जाती है। उनका विचार था कि मनुष्य को केवल आर्थिक

आवश्यकताओं के आधार पर नहीं समझा जा सकता। मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप है और उसके जीवन में भौतिक प्रगति के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है। इसी प्रकार व्यक्ति समाज से अलग नहीं है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक-दूसरे से जु? हुए हैं। इसलिए विकास का उद्देश्य केवल उत्पादन और आर्थिक आंक?ों को ब?ाना नहीं, मनुष्य और समाज के संतुलित विकास को सुनिश्चित करना होना चाहिए। दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक चिंतन भी इसी दृष्टि पर आधारित था। वे ऐसी अर्थव्यवस्था के समर्थक थे, जिसमें विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। इसी विचार से जु?ा उनका 'अंत्योदय' का सिद्धांत आज भी उनके चिंतन की प्रमुख पहचान है। उनका मानना था कि किसी भी विकास व्यवस्था की सफलता का वास्तविक पैमाना यह होना चाहिए कि समाज के सबसे कमजोर और अंतिम व्यक्ति के जीवन में कितना सुधार आया। इस दृष्टि से उनका चिंतन सामाजिक समावेशन और मानव-केंद्रित विकास की चर्चा में आज भी संदर्भित किया जाता है। दीनदयाल उपाध्याय केवल राजनेता और संगठनकर्ता ही नहीं, लेखक और पत्रकार भी थे। उन्होंने लेखनी को सामाजिक जागरण का माध्यम बनाया। उन्होंने 'राष्ट्रधर्म', 'पाञ्चजन्य' और 'स्वदेश' जैसे प्रकाशनों के माध्यम से राष्ट्र, समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और राजनीति से जु?े विषयों पर लिखा। उनके लेखन में सरल भाषा के साथ वैचारिक स्पष्टता दिखाई देती थी। उनका 'पॉलिटिकल डायरी' स्तंभ भी चर्चित रहा। पत्रकारिता को लेकर वे तथ्यपरकता और जिम्मेदारी पर जोर देते थे। उपलब्ध सामग्री के अनुसार, वे समाचारों को संदर्भ से काटकर प्रस्तुत करने के विरुद्ध थे और पत्रकार की जिम्मेदारी को महत्वपूर्ण मानते थे। उनका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सादा था। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन संगठन और सार्वजनिक कार्यों में लगाया। पर और प्रतिष्ठ के बावजूद उनका रहन-सहन सामान्य रहा। यही सादगी उनके व्यक्तित्व की विशेष पहचान बनी। उनके समर्थकों और सहयोगियों के संस्मरणों में उनके सहज व्यवहार, अनुशासन और कार्यकर्ताओं के साथ निकट संबंधों का उल्लेख मिलता है। वे संगठन के केवल पदों और संरचनाओं से नहीं, समर्पित कार्यकर्ताओं के माध्यम से मजबूत करने में विश्वास रखते थे।

दीनदयाल उपाध्याय का जीवन बहुत लंबा नहीं था। 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे स्टेशन के निकट एक रेलवे डिब्बे के पास उनका शव मिला। उनकी मृत्यु की परिस्थितियों ने लंबे समय तक प्रश्न ख? किए और यह घटना भारतीय राजनीतिक इतिहास की चर्चित घटनाओं में शामिल रही। उस समय वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे और उनके निधन से पार्टी को ब?ा झटका लगा। उनका राजनीतिक जीवन और दर्शन भारतीय राजनीति में लंबे समय तक चर्चा का विषय रहा है। उनके विचारों से सहमत और असहमत दोनों पक्षों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उनके चिंतन को उसके मूल संदर्भ में समझा जाए। एकात्म मानववाद, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण, स्वावलंबन, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्र केंद्रित विकास उनके विचारों के प्रमुख पंथ रहे। उनकी रचनाओं और भाषणों में राष्ट्र, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, लोकतंत्र और सामाजिक जीवन पर व्यापक चिंतन मिलता है। पं. दीनदयाल उपाध्याय का जीवन इस बात का उदाहरण है कि सीमित साधनों और कठिन परिस्थितियों में भी कोई व्यक्ति अपने विचार, अनुशासन और कर्म के बल पर सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव छो? सकता है। उन्होंने राजनीति को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के बजाय संगठन और सेवा से जो?ने पर बल दिया। उनका एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज के संबंधों को समग्र दृष्टि से देखने का प्रयास था जबकि अंत्योदय का विचार विकास के लाभ को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की आवश्यकता पर केंद्रित था।

(लेखक- योगेश कुमार गोयल)

भारत-वेस्टइंडीज वनडे सीरीज 27 सितंबर से



तिरुवनंतपुरम में जुटी टीम इंडिया, रोहित-विराट की वापसी से बढ़ा रोमांच

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और वेस्टइंडीज के बीच 27 सितंबर 2026 से शुरू होने वाली बहुप्रतीक्षित व्हाइट-बॉल सीरीज को लेकर टीम इंडिया का जमावड़ा तिरुवनंतपुरम में शुरू हो गया है। शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन वनडे और पांच टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज खेलेगी। वनडे टीम में रोहित शर्मा, विराट कोहली और रवींद्र जडेजा की वापसी ने सीरीज के रोमांच को और बढ़ा दिया है।

गिल की कप्तानी में उतरेगी टीम इंडिया- 27 वर्षीय शुभमन गिल भारतीय वनडे टीम की कप्तानी करेंगे। मुख्य कोच गौतम गंभीर ने गिल के नेतृत्व का समर्थन किया है। टीम में युवा और अनुभवी खिलाड़ियों का मिश्रण देखने को मिलेगा। रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे अनुभवी खिलाड़ियों की वापसी से युवा कप्तान को मैदान के अंदर और बाहर महत्वपूर्ण अनुभव का साथ मिलेगा। रवींद्र जडेजा की भी 50 ओवर के प्रारूप में वापसी हुई है। ऐसे में भारतीय टीम की बल्लेबाजी और ऑलराउंड विकल्पों में अनुभव बढ़ेगा।

एशियन गेम्स के कारण टीम में हुआ बदलाव- 2026 एशियन गेम्स के कारण भारतीय वनडे टीम में कुछ अहम बदलाव देखने को मिले हैं। श्रेयस अय्यर, ईशान किशन, जसप्रीत बुमराह और अक्षर पटेल जैसे प्रमुख खिलाड़ी एशियन गेम्स में हिस्सा ले रहे

हैं। उनकी अनुपस्थिति में रतुराज गायकवाड़ और युवा खिलाड़ी आकिब नबी को टीम में अवसर मिला है। ह सीरीज युवा खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह मजबूत करने का महत्वपूर्ण मौका भी होगी।

27 सितंबर को पहला वनडे

दोनों टीमों के बीच वनडे सीरीज का पहला मुकाबला 27 सितंबर 2026 को तिरुवनंतपुरम के ग्रीनफील्ड स्टेडियम में खेला जाएगा। इसके बाद दूसरा वनडे 30 सितंबर को गुवाहाटी और तीसरा वनडे 3 अक्टूबर को नए चंडीगढ़ में होगा। वनडे सीरीज के बाद दोनों टीमों पांच मैचों की टी20 सीरीज में आमने-सामने होंगी। टी20 मुकाबलों की शुरुआत 6 अक्टूबर से लखनऊ में होगी और आखिरी मैच 17 अक्टूबर को बेंगलुरु में खेला जाएगा।

टीवी और मोबाइल पर ऐसे देख सकेंगे मैच- भारत में सीरीज के मुकाबलों का टीवी पर सीधा प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क पर किया जाएगा। वहीं मोबाइल, लैपटॉप और स्मार्ट टीवी पर मैचों की लाइव स्ट्रीमिंग जियोहॉटस्टार के जरिए देखी जा सकेगी।

एशियन गेम्स में भारत ने रचा इतिहास, पुरुष बैडमिंटन टीम ने जीता पहला कांस्य रोइंग में सतनाम- सलमान ने भी दिलाया पदक

नई दिल्ली। एशियन गेम्स 2026 में भारतीय पुरुष बैडमिंटन टीम ने इतिहास रचते हुए पुरुष टीम इवेंट में पहली बार कांस्य पदक अपने नाम किया। सेमीफाइनल में भारत को चीन के खिलाफ 1-3 से हार का सामना करना पड़ा, जिससे फाइनल में पहुंचने का सपना टूट गया, लेकिन टीम ने कांस्य पदक पक्का कर लिया। इससे पहले क्वार्टर

फाइनल में भारत ने मेजबान जापान को हराकर इस स्पर्धा में अपना पहला पदक सुनिश्चित किया था। वहीं, रोइंग में भी भारत को कांस्य पदक मिला। पुरुष डबल स्कल्स में सतनाम सिंह और सलमान खान की जोड़ी ने 6८13.25 का समय निकालकर तीसरा स्थान हासिल किया। दोनों ने रेस के दौरान शानदार प्रदर्शन किया और अंतिम चरण में पीछे होने के



हांगझोऊ एशियन गेम्स में क्वाड्रपल स्कल्स टीम के साथ कांस्य पदक जीता था।

एशियाई खेल 2026 : भारतीय महिला हॉकी टीम ने थाईलैंड को 20-1 से पीटा

गिफू (ईएमएस)। ड्रैग-फ्लिकर दीपिका सहरावत के 9 गोलों की सहायता से भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशियाई खेलों के अपने तीसरे मुकाबले में थाईलैंड को 20-1 से हराया। इस जीत के साथ ही भारतीय टीम ने टूर्नामेंट में अपनी अजेय बहुत बरकरार रखी है। इस मैच में पूरे समय भारतीय खिलाड़ी हावी रहें। वहीं थाईलैंड की टीम बेबस नजर आयी।

इस मैच में दीपिका ने अपने सभी नौ गोल पेनल्टी कॉर्नर के जरिए किये। दीपिका के अलावा, नवनीत कौर ने चार मैदानी गोल किये जबकि युवा खिलाड़ी ऋजुा पिसाल ने हैट्रिक लगायी। कप्तान सलीमा टेटे, नेहा, लालरेमसियामी और साक्षी राणा ने भी एक-एक गोल कर भारत के स्कोर को 20 तक पहुंचा दिया।

मैच की शुरुआत से ही कोच जोर्ड मारिन की रणनीति के तहत भारतीय टीम ने बेहद



आक्रामक रख अपनाया। सीटी बजते ही भारतीय खिलाड़ियों ने थाईलैंड के हाफ में दबाव बनाना शुरू कर दिया और शुरुआती गोलों से मैच के पहले ही क्वार्टर में भारत ने विरोधी टीम का मनोबल तोड़ दिया।भारतीय मिडफील्डर्स ने गेंद पर पूरा नियंत्रण बनाए रखा और फॉरवर्ड लाइन को लगातार सटीक पास दिए, जिससे गोल पर लगातार हमले जारी रहे। थाईलैंड की टीम को पहले तीन क्वार्टरों तक

भारतीय गोलपोस्ट तक पहुंचने में भी संघर्ष करना पड़ा। हालांकि, मैच के चौथे क्वार्टर के आखिरी मिनटों में थाईलैंड को थोड़ी राहत मिली जब सुपांसा सामान्सो ने पेनल्टी कॉर्नर से एक सात्वना गोल दागने में सफलता पाई! यह जीत एशियाई खेल 2026 में भारतीय महिला टीम के दबदबे को स्पष्ट करती है। भारत ने इससे पहले भी उज्बेकिस्तान को 19-0 और इंडोनेशिया को 17-1 से हराया था, जिससे टीम का गोल अंतर अब बेहद मजबूत हो गया है। लगातार तीन धमाकेदार जीत दर्ज करने के बाद भारतीय टीम अब पूल-बी में शीर्ष स्थान पर मजबूती से काबिज है। इस बेहतरीन प्रदर्शन के बाद भारत का अगला मुकाबला शुक्रवार को मेजबान जापान से होगा, जिसे पूल स्टेज का सबसे अहम मुकाबला माना जा रहा है और यह सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

गुस्से में लिए फैसलों से वक्त के पहले समाप्त हुआ रायुड़ का कैरियर

हैदराबाद (ईएमएस)। पूर्व क्रिकेटर अंबाती रायुड़ भारतीय टीम के एक ऐसे बल्लेबाज रहे हैं। जो बेहद प्रतिभाशाली थे पर अपने मिजाज गर्म के कारण और अप्रत्याशित फैसलों से उनका करियर समय से पहले ही समाप्त हो गया। भारतीय क्रिकेट इतिहास में कुछ ही खिलाड़ी ऐसे होंगे, जिनकी पहचान उनके खेल के साथ-साथ उनके बागी तेवरों के लिए भी बनी हो और उनमें से अंबाती रायुड़ एक ऐसे ही खिलाड़ी हैं जिन्होंने कई बार अपने गुस्से और जल्दबाजी में लिए गए फैसलों से अपने ही करियर को नुकसान पहुंचाया। क्रिकेट के खेल में संयम का बहुत महत्व होता है, और रायुड़ के करियर को देखकर यह बात बखूबी समझी जा सकती है। कभी बीसीसीआई से पंगा, कभी विश्व कप टीम से बाहर होने पर तत्काल संन्यास का ऐलान, और कभी-कभी मैदान के बाहर भी गुस्से में आकर विवादों में घिरना। ये सभी घटनाएं उनके नाम के साथ जुड़ गईं। हालांकि, इन विवादों के बावजूद, एक बल्लेबाज के रूप में उनकी क्षमता पर कभी सवाल नहीं उठाया गया। वह एक बेहतरीन क्रिकेटर थे, जिनमें भारत के लिए लंबा खेलने की काबिलियत थी। उनके करियर का सबसे बड़ा मोड़ शायद 2019 एकदिवसीय विश्व कप टीम का चयन रहा। मध्यक्रम में भारत के सबसे भरोसेमंद बल्लेबाजों में से एक माने जा रहे रायुड़ को अचानक टीम से बाहर कर दिया गया और उनकी जगह ऑलराउंडर विजय शंकर को मौका मिला।



रंभा संभार

वाइब में की है अलग दिशा में एंटरटेन करने की कोशिश: कुणाल खेमु



मुंबई (यशभारत)। बॉलीवुड की कॉमेडी, एक्शन और जासूसी थ्रिलर फिल्म वाइब रिलीज हो चुकी है। अभिनेता कुणाल खेमु ने इस फिल्म के जरिए एक्टिंग, राइटिंग, डायरेक्टिंग और प्रोड्यूसिंग जैसे कई क्षेत्रों में हाथ आजमाया है। कुणाल खेमु ने फिल्म की रिलीज के बाद एक इमोशनल पोस्ट साझा किया है,

जिसमें उन्होंने अपने प्रशंसकों और टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। अभिनेता का मानना है कि इस फिल्म के जरिए उन्होंने सभी को अलग दिशा में एंटरटेन करने की कोशिश की है। कुणाल खेमु ने इंस्टाग्राम पर फिल्म के सीन्स को शेयर किया है, जिसमें फिल्म का गाना वाइब भी ऐड किया गया है। उन्होंने वीडियो शेयर कर लिखा, हार्दिक (कुणाल खेमु के किरदार का नाम) की शुभकामनाएं। अपनी पूरी टीम के साथ आने और माहौल बनाने के लिए दिल से शुक्रिया। अगर अभी तक किसी ने फिल्म नहीं देखी है, तो अपने प्लान में इसे जरूर शामिल करें और साथ मिलकर हम करेंगे और कर सकते हैं (थोड़ा मेटा है, समझने वाले समझ जाएंगे)। यह संदेश उनकी टीम वर्क और भविष्य के लिए उनकी आशा को दर्शाता है। अभिनेता ने बताया कि उन्होंने इस फिल्म के जरिए कुछ अलग करने की कोशिश की है। उन्होंने लिखा, कुछ अलग और नया करने की ये एक जनी रही है। एक्टिंग, राइटिंग, डायरेक्टिंग, प्रोड्यूसिंग। यकीन मानिए, मुझे आगे बढ़ाने वाली सिर्फ एक चीज है- फिल्मों के लिए मेरा कभी न खत्म होने वाला प्यार और आप सभी का शानदार प्यार और सपोर्ट जो आप हमेशा दिखाते आए हैं।

वहीदा रहमान बनेगी पुतलीबाई

मुंबई (यशभारत)। फिल्ममेकर अनुभव सिन्हा और सुधीर मिश्रा एक ऐसी कहानी को पर्दे पर लाने की तैयारी कर रहे हैं, जो महात्मा गांधी के जीवन से जुड़े एक बेहद महत्वपूर्ण और कम चर्चित दौर पर आधारित है। इस फिल्म में नेशनल अवॉर्ड विजेता अभिनेता मनोज बाजपेयी महात्मा गांधी की भूमिका निभा रहे हैं। अब हिंदी सिनेमा की दिग्गज अभिनेत्री वहीदा रहमान भी इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बन गई हैं, जहां वह गांधीजी की मां पुतलीबाई का किरदार निभाती नजर आएंगी। फिल्म की कहानी महात्मा गांधी के जीवन के उन 21 दिनों पर केंद्रित है, जिन्हें इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय के तौर पर देखा जाता है। ऐसे में पुतलीबाई का किरदार कहानी में भावनात्मक स्तर पर खास महत्व रखता है। मेकर्स का मानना है कि वहीदा रहमान जैसी अनुभवी अभिनेत्री की मौजूदगी इस किरदार को और गहराई देगी।

आज ही को अपना पहला दिन बनाएं- कृति सेनन

इंस्टाग्राम पर अपनी लेटेस्ट पोस्ट में मिमी फेम एक्ट्रेस कृति सेनन को पॉटरी (मिट्टी के बर्तन बनाने) की कला सीखते हुए देखा गया। अभिनेत्री ने अपनी बकेट लिस्ट से एक और चीज पूरी कर ली है, जिसे वह सालों से सीखना चाहती थीं। अभिनेत्री कृति सेनन ने फोटो-शेयरिंग ऐप पर एक प्रेरणादायक संदेश साझा किया।

उन्होंने लिखा, वह चीज जिसे आप सालों से करना या सीखना चाहते थे, जो हमेशा आपकी इस साल मुझे ये चीजें करनी हैं वाली लिस्ट में तो होती थी, लेकिन आपने उसके लिए कभी समय नहीं निकाला? किसी दिन कहने के बजाय, आज ही को अपना पहला दिन (डे वन) बनाएं! मेरी लिस्ट में पॉटरी भी शामिल थी! नई स्किल सीखने की खुशीज कुछ अलग ही होती है! कांटेले 2 एक्ट्रेस ने अपनी पोस्ट का अंत यह कहते हुए किया कि उन्हें लगातार खुद को बेहतर बनाते रहना पसंद



है! कृति को हमेशा अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलना और नई चीजें आजमाना पसंद है। यह पहली बार नहीं है जब उन्होंने अपनी बकेट लिस्ट से कोई बड़ा सपना पूरा किया हो। 2023 में, उन्होंने स्काईड्राइविंग में हाथ कक्षेण था, अपने आजमाया और अपनी बकेट लिस्ट से एक और चीज पूरी की



थी। वह अपनी बहन नूपुर सेनन के साथ दुबई गई थीं, जहाँ दोनों बहनों ने स्काईड्राइविंग करने का फैसला किया था। कृति ने अपना अनुभव इंटरनेट पर शेयर करते हुए अपने ऑफिशियल हैंडल पर एक वीडियो अपलोड किया था। वीडियो की शुरुआत में उन्होंने कहा था, हाँ, अभी पेट में थोड़ी घबराहट (बटरफ्लाइज) हो रही है।

इसके बाद, लुका लुथी की एक्ट्रेस ने आसमान में ड्राइव का खूब मजा लिया। जब उनसे पूछा गया कि उन्हें कैसा लगा, तो कृति ने कहा था, बहुत बढ़िया! यह बिल्कुल अजब पंछी जैसा महसूस हो रहा है। इस रोमांचक वीडियो के कैप्शन था, अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकल रही हूँ।

कुछ नया सीखने का सिलसिला कभी नहीं रुकता : अमिताभ बच्चन

बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता अमिताभ बच्चन ने मेडिकल साइंस की बारीकियों और नैतिकता की परीक्षाओं से लेकर संगीत की असीम दुनिया तक उन कई सीखों को याद किया जो जुदिगी हमें देती रहती है। हिंदी सिनेमा के सुपर स्टार ने कहा कि हर दिन केबीसी के दायरे और जिंदगी के दायरों में कुछ नया सीखने को मिलता है, जो उनके लिए कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है।

स्टार ने अपने ब्लॉग पर लिखा-हर दिन कुछ नया सीखनाज कुछ दूसरों के बारे में, लेकिन ज्यादातर अपने बारे मेंज हम कौन हैं, क्या हैं और कहाँ हैंज और सीखने का सिलसिला कभी नहीं रकता। मेडिकल साइंस की पेचीदगियां, ज्ञान की विविधता, नैतिकता की परीक्षाएं और हर दिन कुछ नया सीखना। सिर्फ केबीसी के दायरे में ही नहीं, बल्कि जिंदगी के दायरे में भी। यह दिखाता है कि अमिताभ बच्चन सिर्फ एक अभिनेता ही नहीं, बल्कि एक आजीवन विद्यार्थी भी हैं जो हर पल कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। इसके बाद अमिताभ बच्चन ने संगीत के बारे में विशेष रूप से बात की। उन्होंने कहा, और फिर संगीत है जो कभी खत्म नहीं होता, कभी माफ नहीं करता, कभी रोकता नहीं, लेकिन हर पल एक चुनौती पेश करता है -



बच्चन का सहज और ज्ञानवर्धक अंदाज़ ही इस शो की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण है। बिग बी, जिन्हें आखिरी बार टी. जे. ज्ञानवेल की फिल्म वेड्डेयन में देखा गया था, वे नितेश तिवारी की आने वाली बड़ी फिल्म रामायण-पार्ट 1 में नज़र आएंगे। इस फिल्म में यश, रणबीर कपूर, साईं पल्लवी और सनी देओल भी होंगे।

फिल्म को देखने के बाद मुझे प्रेम से प्यार हो गया था: आयुष्मान



मुंबई (यशभारत)। बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना ने बताया कि उन्हें हिंदी सिनेमा से प्रेम 1994 की फिल्म हम आपके हैं कौन देखने के बाद हुआ था। अभिनेता आयुष्मान खुराना ने कहा, मुझे याद है कि मैंने हम आपके हैं कौन में कई परिवार थे और उस फिल्म को देखने के बाद मुझे प्रेम से प्यार हो गया था, मुझे हिंदी सिनेमा और हमारे परिवार की ताकत से प्रेम हो गया था। अभिनेता आयुष्मान ने यह भी बताया कि उन्हें अभी भी यकीन नहीं हो रहा है कि वे राजश्री प्रोडक्शन के हीरो बन गए हैं, जो उनके लिए एक सपने के सच होने जैसा है। यह बयान राजश्री फिल्मों के उनके व्यक्तिगत प्रभाव और भारतीय पारिवारिक मूल्यों के प्रति उनके जुड़ाव को दर्शाता है। अभिनेता ने राजश्री प्रोडक्शन हाउस के साथ अपने जुड़ाव पर बात करते हुए कहा कि यह रिश्ता सिर्फ उनका नहीं बल्कि, पूरे देश के परिवारों से जुड़ा है। उन्होंने कहा, राजश्री के साथ मेरा जो रिश्ता है, वो सिर्फ मेरा नहीं है, वो पूरे हिंदुस्तान का है, सभी परिवारों का है। सभी परिवारों को एक साथ लाने की जो जिम्मेदारी उन्होंने फिल्मों के जरिए उठाई है, मुझे लगता है यह बहुत ही खूबसूरत है। आयुष्मान का यह कथन राजश्री फिल्मों के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करता है। आयुष्मान खुराना ने डायरेक्टर सूरज बडजात्या से जुड़ा एक किस्सा भी साझा किया, जो उनकी विनम्रता और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

